



Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ गणेश चतुर्थी व्रत कथा ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ गणेश चतुर्थी व्रत कथा ॥

गणेश चतुर्थी के दिन भगवान श्रीगणेश की पूजा के साथ उनकी व्रत कथा सुनने या पढ़ने की परंपरा है। गणेश जी को विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, श्रद्धापूर्वक गणेश चतुर्थी का व्रत और कथा करने से विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं तथा सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

भगवान गणेश के जन्म की कथा

एक समय की बात है। माता पार्वती ने स्नान करने से पहले अपने शरीर के उबटन से एक बालक की आकृति बनाई और उसमें प्राण डाल दिए। उन्होंने उस बालक को अपना पुत्र माना और उसका नाम गणेश रखा। माता पार्वती ने गणेश जी को आदेश दिया कि जब तक वह स्नान कर रही हैं, तब तक किसी को भी अंदर प्रवेश न करने दें। कुछ समय बाद भगवान शिव वहां पहुंचे। गणेश जी ने उन्हें अंदर जाने से रोक दिया। भगवान शिव ने समझाया कि वे माता पार्वती के पति हैं, लेकिन माता की आज्ञा का पालन करते हुए गणेश जी अपने स्थान से नहीं हटे।

इस पर भगवान शिव और गणेश जी के बीच युद्ध हुआ। अंत में भगवान शिव ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल से गणेश जी का सिर अलग कर दिया।

जब माता पार्वती को इस घटना का पता चला तो वे अत्यंत क्रोधित और दुखी हुईं। उन्होंने भगवान शिव से अपने पुत्र को पुनर्जीवित करने के लिए कहा।

भगवान शिव ने अपने गणों को आदेश दिया कि वे उत्तर दिशा की ओर जाएं और जो भी जीव सबसे पहले मिले, उसका सिर लेकर आए। गणों को एक हाथी का सिर मिला। भगवान शिव ने उस हाथी के सिर को गणेश जी के शरीर पर स्थापित किया और उन्हें पुनः जीवन प्रदान किया।

भगवान शिव ने गणेश जी को आशीर्वाद देते हुए उन्हें गणों का अधिपति और प्रथम पूजनीय घोषित किया। उन्होंने कहा कि किसी भी शुभ कार्य या पूजा से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाएगी। इसी कारण भगवान गणेश को विघ्नहर्ता, गणपति और प्रथम पूज्य कहा जाता है।

गणेश जी और चंद्रमा की कथा

गणेश चतुर्थी से जुड़ी एक अन्य प्रसिद्ध कथा चंद्रमा से संबंधित है। एक बार गणेश जी का वाहन मूषक उन्हें लेकर जा रहा था। रास्ते में मूषक किसी वस्तु से ठोकर खाकर गिर गया और गणेश जी भी गिर पड़े। गणेश जी को देखकर चंद्रमा हंस पड़े। गणेश जी को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने चंद्रमा को श्राप दिया कि जो भी व्यक्ति गणेश चतुर्थी के दिन चंद्रमा को देखेगा, उस पर मिथ्या कलंक लग सकता है। बाद में चंद्रमा ने गणेश जी से क्षमा मांगी। भगवान गणेश ने अपना श्राप कम करते हुए गणेश चतुर्थी के दिन चंद्र दर्शन से बचने की परंपरा बताई।

गणेश चतुर्थी व्रत का फल

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, गणेश चतुर्थी के दिन श्रद्धा और नियमपूर्वक व्रत रखकर भगवान गणेश की पूजा एवं कथा करने से: जीवन के विघ्न और बाधाएं दूर होने की कामना की जाती है।

बुद्धि, विवेक और एकाग्रता की प्राप्ति होती है।

घर में सुख-शांति एवं समृद्धि बनी रहने की कामना की जाती है। कार्यों में सफलता और शुभ फल की प्राप्ति की प्रार्थना की जाती है। भगवान गणेश की कृपा से सकारात्मकता और मंगल भाव बढ़ता है।